26

तूफ़ान से ऊपर उठना

(7:9-17)

जहाज़ के उड़ान भरने पर मुझे घबराहट हो रही थी। बारिश हो रही थी और हवा भी चल रही थी; आसमान में काली घटा छाई हुई थी और डर लग रहा था। खिड़की में से झांकने पर मुझे आश्चर्य हो रहा था कि उड़ान रद्द क्यों नहीं की गई या कम से कम इसे कुछ देर के लिए रोक क्यों नहीं दिया गया। जहाज़ ऊंचाई पर जाने के बाद, एक तेज़ आंधी कैबिन को लगी। मैंने देखा कि उलटी करने वाली थैली पास ही पड़ी है या नहीं। कुछ मिनटों की घबराहट भरी कंपकंपी के बाद जहाज़ अंधकार में से निकलकर धूप में आ गया। नीचे रूई की बड़ी-बड़ी गेंदों के ढेर की तरह सफेद बादल चमक रहे थे। अब उड़ान समतल थी। हम तूफ़ान से ऊपर आ चुके थे।

पिछले पाठ में परमेश्वर के सेवकों को आने वाले तूफ़ान के लिए तैयार करने के लिए मुहर करने की तस्वीर दिखाई गई थी। इस पाठ में हम उन्हें तूफ़ान के *बाद* परमेश्वर के सामने देखेंगे।

अध्याय 7 के पहले दृश्य में हमें पृथ्वी पर ''खाड़कू कलीसिया''[1]; अन्तिम दृश्य में स्वर्ग में[2] ''विजयी कलीसिया''[3] मिलती है। पहले दृश्य में मसीही लोगों के बचाए जाने को दिखाया गया है, जबकि दूसरे में मसीही लोगों को प्रतिफल मिलने की तस्वीर है। 1 से 8 आयतें वर्तमान सुरक्षा पर केंद्रित हैं, जबकि 9 से 17 आयतें अन्तिम उद्धार का जश्न मनाती हैं।

रॉबर्ट माउंस ने प्रकाशितवाक्य 7:9-17 को ''वचन में कहीं भी मिलने वाली स्वर्गीय स्थिति के सबसे ऊंचे चित्रों में से एक'' कहा है।[4] मैरिल सी. टैनी ने लिखा है कि यह अध्याय ''सताए जाने वालों के आश्रय, भक्तों के आनन्द और सभी छुड़ाए हुओं के लक्ष्य'' को बताता है।[5] ये आयतें पहली शताब्दी में मौत का सामना करने वाले मसीही लोगों को शांति देने के लिए लिखी गई थीं और आज भी इनसे शांति मिलती है।

दृश्य (7:9-12, 14)

भीड़ को पहचानना (आयतें 9, 11, 14)

इन आयतों का आरम्भ सिंहासन के इर्द-गिर्द छुड़ाए हुओं के चित्रण से होता है: ''इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से

एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था[6] श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन और मेमने के सामने खड़ी'' थी (आयत 9)।

आयत 11क कहती है कि ''सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं।'' यह सिंहासन का वह दृश्य है, जिसका परिचय अध्याय 4 में दिया गया था। (सिंहासन के सामने अपना मुकुट रखता एक प्राचीन का चित्र देखें।)

हम ने इस भाग का पूरा चक्र लगा लिया है:[7] अध्याय 4 में हमने सिंहासन से आरम्भ करके प्राचीनों और जीवित प्राणियों को जोड़ा था। अध्याय 5 के दृश्य में स्वर्गदूतों के साथ मेमना भी आ गया था। अब अध्याय 7 में एक असंख्य भीड़ सिंहासन के सामने जमा है। (सिंहासन के गिर्द भीड का चित्र देखें।)

यह भीड़ किन लोगों की है? मेरा ध्यान 1956 की बसंत ऋतु पर जाता है। मैं अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) में प्रकाशितवाक्य पर फ्रैंक पैक की कक्षा में था। एक दिन भाई पैक ने मुझे अपनी जगह क्लास लेने के लिए कह दिया। मुझे प्रकाशितवाक्य 7:9-17 में से सिखाना था। क्लास को सिखाते हुए मैंने कहा कि यह भीड़ मूलत: 1 से 8 आयतों में दिए गए 1,44,000 वाला समूह ही है।[8] मेरे कुछ सहपाठी मुझ से बिल्कुल सहमत नहीं थे और उन्होंने मुझे बताने में कोई हिचक नहीं की। अगला पीरियड आरम्भ होते ही उन्होंने भाई पैक से इस विषय में पूछा। भाई पैक मेरे निष्कर्ष से सहमत थे परन्तु छात्रों की संतुष्टि के लिए उन्हें उन्हीं आयतों पर फिर से पूरा पीरियड देना पड़ा। जहां तक मुझे याद है, उसके बाद उस सेमेस्टर में वे गैर हाज़िर नहीं हुए।

मैं आज भी उसी निष्कर्ष को मानता हूं, जिस पर चालीस से अधिक साल पहले पहुंचा था कि दोनों समूह मूलत: एक ही हैं। अधिकतर टीकाकार मुझ से सहमत हैं। जो नहीं हैं, वे इन दोनों समूहों में पाए जाने वाले स्पष्ट अन्तर दिखाते हैं:

(1) कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि पहले समूह में यहूदी हैं, जबकि दूसरे में अन्य जाति, परन्तु पिछले पाठ में हमने यह ज़ोर दिया था कि 1,44,000 आत्मिक इस्राएल अर्थात कलीसिया को दर्शाते हैं और सभी उद्धार पाए हुओं का संकेत देते हैं। इस पाठ के लिए वचन में हमें बताया गया है कि भीड़ में ''*हर* जाति'' (आयत 9) से छुड़ाए हुए लोग हैं, न कि यहूदियों के *अलावा* हर जाति में से। इसलिए दोनों समूहों में सब उद्धार पाए हुए हैं चाहे वे यहूदियों में से हों या अन्य जातियों में से।

(2) कुछ लोग इस बात को महत्व देते हैं कि पहले समूह की गिनती बताई गई है, जबकि दूसरे की गिनती नहीं है। तौ भी इस बात पर ध्यान दें कि यूहन्ना ने दो विशाल भीड़ समूहों को *देखा*। उसने पहले समूह को *गिना* नहीं, बल्कि उसे गिनती *बताई गई* थी। (मेरा भाई कोय मुझे यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन के स्टेडियम में होने वाले फुटबॉल मैच देखने के लिए ले गया। मेरे लिए फट्टों पर बैठे लोगों को *गिनना* सम्भव नहीं था, परन्तु मुझे *बताया गया* था कि वहां 1,00,000 से अधिक लोग थे।) बेशक 7:4 में दी गई संख्या 1,44,000 ही नहीं, बल्कि सांकेतिक है। यह बात कि एक भीड़ का जोड़ बताया गया है और दूसरी का नहीं, यह निष्कर्ष निकालने में कोई दिक्कत नहीं होती कि दोनों मूलत: एक

ही समूह हैं।[9]

अध्याय 7 के दोनों दृश्यों को मैं इस प्रकार मिलाता हूं: 1 से 8 आयतें मसीही लोगों को विनाश की आंधी छोड़े जाने पर सुरक्षित करने के लिए मुहर लगाने की बात करती हैं। 1,44,000 संख्या कलीसिया के सभी सदस्यों को, चाहे वे अतीत में हों, वर्तमान में या भविष्य में दिखाती हैं। इस परिस्थिति से एक सवाल उठता है: क्या परमेश्वर की सुरक्षा पर्याप्त है यानी क्या यह प्रभावकारी है? 9 से 17 आयतें इस सवाल का जवाब देती हैं: भीड़ ''महाक्लेश'' में से बच निकली थी (आयत 14)। मुहर किए हुए लोग विनाश की आंधियों से नष्ट नहीं हुए थे, बल्कि परमेश्वर की उपस्थिति में सुरक्षित आ गए थे! इस कारण 1,44,000 युद्ध से *पहले* परमेश्वर के लोगों को दिखाता है, जबकि लोगों की बड़ी भीड़ युद्ध के *बाद* अर्थात परमेश्वर के लोगों की विजयी भीड़ का संकेत है।[10]

आरम्भिक मसीही जब अध्याय 7 पढ़ते थे तो यह उनसे कहता था, ''जब तुम्हें रोम का सामना करना है, तो परमेश्वर तुम्हारे साथ होकर तुम्हारी रक्षा करेगा। रोम चाहे तुम्हें मार भी दे तौ भी अन्तिम परिणाम यही होगा कि तुम प्रभु के साथ घर में चले जाओगे!'' जब मैं और आप इस पद को पढ़ते हैं तो यह हमें प्रतिज्ञा देता है कि जीवन में चाहे कितनी भी परेशानियां क्यों न हों, कल का दिन नई रौशनी लाएगा!

वचन की समीक्षा (आयतें 9-12)

इस परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए, आइए इस पूरे भाग को एक-एक आयत करके देखते हैं :

वह भीड़ ''हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से'' थी (आयत 9क)। इससे पहले मेमने की महिमा इन शब्दों से हुई थी कि ''... तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है'' (5:9ख)।[11] उद्धार पाए हुए लोग हर पृष्ठभूमि से थे। किसी बड़े महानगर के व्यस्त बाज़ार में खड़े होकर यदि आपने हर जाति के लोगों की भीड़ को पास से गुज़रते देखा हो तो आप उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं, जो यूहन्ना ने देखा था।

यूहन्ना ने देखा कि ''एक ऐसी बड़ी भीड़ [है], जिसे कोई गिन नहीं सकता था''(आयत 9ख)। अब्राहम को बताया गया था कि उसकी संतान भूमि की मिट्टी, आकाश के तारों और समुद्र की रेत की तरह अनगिनत होगी (उत्पत्ति 13:16; 15:5; 32:12)। मसीही लोग अब्राहम की आत्मिक संतान हैं (रोमियों 4:11; गलतियों 3:29) जिस कारण यह विवरण विशेषकर उपयुक्त लगता है।

ध्यान दें कि यह ''एक *विशाल* भीड़'' थी (AB)। यीशु ने ज़ोर देकर कहा था कि ''थोड़े हैं'' जो उस तंग मार्ग को पाते हैं ''जो जीवन को पहुंचाता है'' (मत्ती 7:14), परन्तु ''थोड़े'' यहां एक तुलनात्मक शब्द है। किसी भी ऐसे व्यक्ति को जिसे प्रभु ने निकाला है, उद्धार पाए हुओं में मिलाना गलत है, परन्तु जिसे प्रभु ने मिलाया है, उसे निकालना भी गलत है। एक पुराने व्यंग्य के अन्तिम शब्द कुछ इस प्रकार हैं,''सिर्फ मैं और तुम स्वर्ग में जा रहे

हैं ... और कभी-कभी मुझे तुम्हारे बारे में शक होता है।''

हमें ''एलिय्याह वाली सोच'' से बचना चाहिए कि ''मैं ही अकेला रह गया हूं'' (1 राजा 19:10, 14)। ऐसा विचार आने पर हमें ''सात हज़ार इस्राएलियों'' को याद करना चाहिए ''जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके'' थे (1 राजा 19:18)। या प्रकाशितवाक्य 7 की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो ''एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था'' (आयत 9), अभी भी प्रभु की विश्वासी थी।

मैं खुश हूं, क्या आप नहीं हैं? क्या यह दुख की बात न होती यदि स्वर्ग एक ''भूतिया नगर''[12] होता अर्थात इसकी गलियां सूनी और कमरे वीरान होते? प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें आश्वस्त करती है कि यह प्रसन्न लोगों से खचाखच भरा एक खुशहाल महानगर होगा यानी रोशनियों से जगमगाता, कामकाज में पस्त और आनन्द के शोर से भरा नगर है!

परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े रहने वालों ने ''श्वेत वस्त्र पहिने'' हुए थे (आयत 9घ)। श्वेत वस्त्र देने की प्रतिज्ञा विजय पाने वालों को दी गई थी (3:4, 5; 3:18 भी देखें)। श्वेत वस्त्र ''स्वर्गीय सिंहासन के सामने पहने जाने वाले 'दरबारी वस्त्र''' थे।[13]

''और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए'' थे (आयत 9ङ)। यहां पहली बार खजूर की डालियों का प्रतीक मिला है। यहूदी सोच के अनुसार खजूर के पेड़ की डालियां विजय और आनन्द का प्रतीक थीं। खजूर की डालियों का इस्तेमाल डेरों के पर्व अर्थात कौमी आनन्द के समय किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 23:34, 40; जकर्याह 14:16 भी देखें)। फिर ''ज्यूडास मकेबियुस के समय से [खजूर की डालियां] यहूदी पर्वों में शाही उम्मीद का प्रतीक बन गई थीं।''[14] यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश के दौरान लोगों ने ''खजूर की डालियां लीं और उस से भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे कि होशाना, धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है'' (यूहन्ना 12:13)।

यूहन्ना ने फिर लिखा कि एक बड़ी भीड़ ''सिंहासन के सामने और मेमने के सामने खड़ी है'' (आयत 9ग)। शीबा की रानी ने सुलैमान से कहा था, ''धन्य हैं ये तेरे सेवक! जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहते हैं'' (1 राजा 10:8ख)। वे कितने धन्य हैं, जो परमेश्वर और यीशु के सामने खड़े रहते हैं!

प्रकाशितवाक्य 7 में खजूर की डालियां लिए लोग आनन्द कर रहे थे: ''और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने की जय-जयकार हो'' (आयत 10)। ''उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का'' वाक्यांश का अर्थ है कि परमेश्वर हमारे उद्धार का देने वाला है। RSV में ''उद्धार हमारे परमेश्वर *की ओर से*'' है।

इस आयत में ''उद्धार'' स्वर्ग में अनन्त जीवन की अन्तिम स्थिति है। ''उद्धार'' पिछले पापों से उद्धार (मरकुस 16:16), परमेश्वर के विश्वासी बालक द्वारा लिए जाने वाले उद्धार के आनन्द (2 कुरिन्थियों 2:15; 1 यूहन्ना 1:7 भी देखें), या (इस आयत की तरह) अनन्तकाल के लिए बचाए जाना है। पतरस ने ''उस उद्धार के लिए, जो आने वाले

समय में प्रकट होने वाला है'' की बात की (1 पतरस 1:5ख)।

''उद्धार'' के यूनानी शब्द में पूर्ण किया जाना, चंगाई पाना, अन्त में सुरक्षित होना की अवधारणाएं हैं। इस कारण NEB में इस शब्द का अनुवाद ''विजय'' के रूप में हुआ है। छुड़ाए हुओं को पाप पर विजय, अपनी परीक्षाओं पर विजय और अपने शत्रुओं पर विजय मिली थी, जिस कारण वे प्रभु की महिमा करते थे।

शीघ्र ही सिंहासन के कमरे में हर कोई महिमा करने में लग गया। ''जब 'एक मन फिराने वाले पापी के विषय में स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है' [लूका 15:10], तो छुड़ाए हुए सभी के अपने परमेश्वर के सामने खड़े होने पर स्वर्गीय भीड़ में उससे भी कितना अधिक आनन्द होगा!''[15]

> और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के सामने मुंह के बल गिर पड़े; और परमेश्वर को दण्डवत करके कहा, आमीन।[16] हमारे परमेश्वर की स्तुति, और महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद और आदर, और सामर्थ, और शक्ति[17] युगानुयुग बनी रहें। आमीन (आयतें 11, 12)।

शब्दावली की व्याख्या करना

महिमा, वस्त्रों, खजूर की डालियों और 7:9-12 के अन्य विवरण टीकाकारों को यह अवलोकन करने के लिए उकसाते हैं कि इन आयतों का अधिकतर रूपक स्पष्टतया ''सब यहूदी पर्वों में से सबसे अधिक आनन्ददायक''[18] अर्थात डेरों के पर्व से लिया गया था। यह पर्व यहूदियों की मिस्र से कनान की यात्रा को स्मरण करने के लिए और कटनी का मौसम पूरा होने के लिए भी मनाया जाता था। हमने प्रकाशितवाक्य 7:9-12 की कुछ बातें पहले ही बता दी हैं जो उस पर्व से मेल खाती हैं:

वस्त्र। डेरों के पर्व के दौरान लोग त्यौहार वाले कपड़े पहनते, गाते और परमेश्वर से प्रार्थना करते थे।

खजूर की डालियां। यहूदियों को यह आज्ञा दी गई थी, ''और पहिले दिन तुम अच्छे-अच्छे वृक्षों की उपज, और खजूर के पत्ते, और घने वृक्षों की डालियां, और नालों में के मजनू को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा के सामने सात दिन तक आनन्द करना'' (लैव्यव्यवस्था 23:40)। पूरे पर्वों के दौरान खजूर की डालियों का इस्तेमाल किया जाता था।

महिमा। जंगल में से अपने लोगों को सुरक्षित निकाल लाने के लिए परमेश्वर की बड़ाई की जाती थी।

वचन के हमारे शेष भाग, 7:13-17 में इससे मिलती-जुलती अन्य सम्भावनाएं हैं:

तम्बू (या झोंपड़ियां)। पर्व के दौरान यहूदी लोग अपने आप को जंगल में घूमने की बात याद दिलाने के लिए अस्थाई ढांचों में रहते थे, जिनके पास आश्रय या प्रावधान नहीं होता था उन्हें दूसरों के तम्बुओं (या झोंपड़ियों) में बुला लिया जाता था। इसी प्रकार परमेश्वर छुड़ाए हुओं के ऊपर ''अपना तम्बू तानेगा'' (आयत 15) ताकि वे सुरक्षित रहें

और उनकी संभाल होती रहे (आयत 16)।

पानी तक ले गया। पर्व के अन्तिम दिन को ''पर्व का मुख्य दिन'' (यूहन्ना 7:2, 37) कहा जाता था। उस दिन आनन्दित आराधक याजक के साथ शीलोह के कुण्ड पर जाते थे जहां वह समारोह में इस्तेमाल होने के लिए पानी निकालता था। इसी प्रकार मेमना छुड़ाए हुओं को ''जीवन रूपी जल के सोतों के पास'' ले जाएगा (प्रकाशितवाक्य 7:17)।[19]

निश्चय ही लगता है कि इस रूपक का अधिकतर भाग डेरों के पर्वों से लिया गया है। लिया गया है या नहीं, परन्तु 7:9-17 आनन्दित आराधकों की तस्वीर दिखाता है। वे ''महाक्लेश'' से निकलकर आए थे। परन्तु उन्हें कोई थकावट नहीं थी। वे हर्षित, आनन्द से भरे और विजयी मूड में थे!

महत्व (7:13-17)

यह सुनिश्चित करने के लिए हम इस बात के लिए धन्यवादी हों कि विश्वासी लोग स्वर्ग में कितने आशीषित होंगे, प्रभु ने यूहन्ना को एक दिलचस्प प्रश्नोत्तरी लिखने के लिए कहा।[20] ''इस प्रकार प्राचीनों[21] में से एक ने मुझ से कहा;[22] ये श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं: और कहां से आए हैं?'' (आयत 13)।

> गौर से देखने के लिए इस नबी ने अपनी आंखों पर हाथ से छाया की और देखा, परन्तु उससे श्वेत वस्त्र पहने आदमी पहचाना न गया। उसने कभी ऐसा देखा नहीं था। उसे शोक के काले, पाप के भूरे, शाही संकेत देने वाले बैजनी रंग का तो पता था; उसने सोने और चांदी के बटने और मोतियों जड़ी सजावट देखी थी, जो हज़ारों में अलग थी; परन्तु शुद्ध श्वेत वस्त्र, स्वर्गीय बातों का प्रतीक था, जो पृथ्वी पर कभी नहीं दिखा था।[23]

यूहन्ना ने अपनी अज्ञानता को स्वीकार किया कि वे लोग कौन थे और जानने की इच्छा जताई: ''हे स्वामी[24] तू ही जानता है'' (आयत 14क)।

उस प्राचीन का उत्तर अनन्तकाल के लिए बचाए जाने वालों को मिलने वाली आशीष का विस्तृत विवरण है।

जीवित रहने की आशीष (आयत 14ख)

प्राचीन ने पूछा था, ''ये श्वेत वस्त्र पहने हुए कौन हैं? और कहां से आए हैं?'' अब इस प्राचीन ने अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया: ''ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकलकर[25] आए हैं'' (आयत 14ख)।

मैं यह ज़ोर देने के लिए रुकता हूं कि ''महाक्लेश'' द्वितीय आगमन से तुरन्त पहले आने वाले सात वर्ष के किसी काल्पनिक काल के लिए तकनीकी शब्द नहीं है।[26] यह विचार कि परमेश्वर के लोग भविष्य में हज़ार वर्ष के महाक्लेश से बच निकलेंगे, यूहन्ना के समय के मसीही लोगों को कोई शांति देने वाला नहीं होना था। कलीसिया की आरम्भिक शताब्दियों के मसीही लोगों द्वारा ''महाक्लेश'' शब्द पढ़ने पर इसका अर्थ उनके लिए वे

परीक्षाएं और क्लेश होंगे जिनमें से *वे* गुजर रहे थे।

अपने अध्ययन में हमने देखा है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में निकट भविष्य में परीक्षा के भयंकर समय की भविष्यवाणी की गई थी। स्मुरने की कलीसिया को कहा गया था, ''देखो, शैतान तुम में से कितनों को जेलखाने में डालने पर है, ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा: प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (2:10ख)। फिलाडेल्फिया के मसीही लोगों को ''परीक्षा के उस समय '' के बारे में बताया गया था ''जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिए सारे संसार पर आने वाला है'' (3:10ख)। लाल घोड़े के ''सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक-दूसरे को वध करें'' (6:4ख)। वेदी के नीचे के शहीदों को बताया गया था कि ''तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो तुम्हारी नाईं वध होने वाले हैं'' (6:11)। इस संदर्भ में ''महाक्लेश'' शब्द सम्भवतया रोमी सरकार द्वारा किए गए मसीही लोगों के सताव के लिए इस्तेमाल हुआ है।

परन्तु इस पद को संभालकर रखा गया है, क्योंकि इसका संदेश आज भी हमारे लिए और हर युग के लिए है कि परमेश्वर अपने लोगों की उनके समय और स्थान में परीक्षाओं और क्लेशों में से निकल आने में सहायता करेगा। अनुवादित शब्द ''महाक्लेश'' के यूनानी शब्द का अर्थ ''दबाना या निचोड़ना'' है; इसका इस्तेमाल बारीक आटा बनाने के लिए गेहूं या जौ पीसने के लिए किया जाता था।

> इसमें चक्की के दबाव में न आने वाले निचले पाट और ऊपरी पाट के बीच जिसने उस प्रक्रिया को दिखाया गया है। मसीही जीवन पर लागू करने पर इसका अर्थ है कि मसीही व्यक्ति अपने दृढ़ विश्वास की दबाव में न आने वाली मांग और समझौता करने के लिए संसार को दमनकारी चुनौती के बीच फंसा हुआ है।[27]

यीशु ने अपने चेलों को जोर देकर कहा था, ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है'' (यूहन्ना 16:33ख) और पौलुस ने नये मसीही लोगों को चौकस किया था कि ''हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' (प्रेरितों 14:22ख)। एडवर्ड मैक्डोवल ने निष्कर्ष निकाला कि ''महाक्लेश'' वाक्यांश ''परमेश्वर के लोगों के सांसारिक अनुभव यानी परमेश्वर के सब लोगों'' पर लागू किया जा सकता है।[28] बाइबल यह स्पष्ट करती है कि गिरे हुए संसार के बीच में विश्वासी जीवन व्यतीत करने वाले हर व्यक्ति को क्लेश का सामना करना ही पड़ेगा (कुलुस्सियों 1:24; 2 तीमुथियुस 3:1-5)।

हमें क्लेश को ऐसे थोक के हिसाब से नहीं समझ लेना चाहिए कि इस आयत के संदेश को ही भूल जाएं कि स्वर्ग में पवित्र लोग *बचकर निकले थे।* क्लेश चाहे कैसा भी क्यों न हो, वह सदा तक नहीं रह सकता। प्रभु के विश्वासी बने रहें और आप भी अपने निजी क्लेश में से निकल सकते हैं।

उद्धार की आशीष (आयत 14ग)

फिर उस प्राचीन ने भीड़ द्वारा पहने श्वेत वस्त्रों का महत्व समझाया: ''इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेमने के लोहू में से धोकर श्वेत किए हैं'' (आयत 14ग)।

''लहू में धोकर'' वाक्यांश को हम में से कुछ लोग इतना अधिक जानते हैं कि हम इस रूपक को समझ नहीं पाते। पापपूर्ण जीवन की तुलना मैले कपड़ों से करने का विचार बहुत ही आम है (यशायाह 64:6; जकर्याह 3:3-5), परन्तु प्रकाशितवाक्य 7:14 में गंदे कपड़ों को *श्वेत* करने के लिए *लाल* लहू में धोया गया था। एस.डी.गोर्डन ने लिखा है, ''यह यीशु अकेला ही कैसा रसायनज्ञ और कलाकार है! वह गहरे काले रंग में से शुद्ध श्वेत रंग बनाने के लिए चमकीले लाल रंग का इस्तेमाल करता है''।[29]

ध्यान दें कि सिंहासन के इर्द-गिर्द लोग इस धोने से अलग नहीं थे: *उन्होंने* ''अपने-अपने वस्त्र धोए हुए थे''; *उन्होंने* ''उन्हें लहू में धोया'' था।[30] प्रचारक हनन्याह ने शाऊल से कहा था, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर *पापों को धो डाल*'' (प्रेरितों 22:16ख)। पश्चात्तापी विश्वासियों के रूप में बपतिस्मे के पानी में डुबकी लेने पर हमारे मन धोए जाते हैं और मेमने के लहू में शुद्ध किए जाते हैं। फिर मसीहियों के रूप में परमेश्वर के वचन के प्रकाश में चलने पर (भजन संहिता 119:105) वह लहू लगातार हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)। ''निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू'' (1 पतरस 1:19) के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो!

सेवा की आशीष (आयत 15क)

फिर प्राचीन ने कहा, ''इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं और उसके मन्दिर में[31] दिन-रात उसकी सेवा करते हैं''[32] (आयत 15क)।

स्वर्ग को आमतौर पर सुस्ती वाले स्थान के रूप में दिखाया जाता है, जहां हम अकड़े हुए सफेद कपड़ों में अनन्तकाल तक रूई जैसे सफेद बादलों पर हाथ पर हाथ धरकर बैठे हैं। क्या यह उकता देने वाला नहीं होगा? परमेश्वर चाहता है कि हमें पता होना चाहिए कि स्वर्ग कामकाज वाली जगह है, जहां हम उसकी आराधना और सेवा करते हैं (22:3 भी देखें)।[33]

एक दिन, जब मिरली हंटर अगले रविवार के लिए कम्युनियन ट्रे साफ कर रही थी तो उसने प्रचारक से पूछा, ''स्वर्ग में जाने पर, मुझे लगता है कि वहां भी कुछ साफ करना पड़ेगा!''[34] हम पक्का नहीं कह सकते कि हम क्या कर रहे होंगे (परमेश्वर की महिमा करने के अलावा), परन्तु इतना जानते हैं कि हम व्यस्त होंगे और प्रसन्न होंगे। रुडयर्ड किपलिंग ने लिखा है:

> जब पृथ्वी की अंतिम तस्वीर रंगी जाए और
> नालियां घुमाई जाएं और सूख जाएं,
> जब पुराने से पुराने रंग फीके पड़ जाएं, और
> छोटे से छोटे आलोचक मर जाएं,
> हम आराम करेंगे, और विश्वास, उसकी हमें आवश्यकता होगी चाहे एक पल के
> लिए लेटें या दो के लिए,

जब तक सब अच्छे कारीगरों का मालिक हमें नया काम नहीं देता।

.....

और केवल प्रभु मालिक हमारी प्रशंसा करेगा, और केवल
प्रभु ही हम पर दोष लगाएगा;
और धन के लिए कोई काम नहीं करेगा, और
प्रसिद्धि के लिए कोई काम नहीं करेगा,
बल्कि हर कोई काम से मिलने वाले आनन्द के लिए, और हर कोई
अपने अलग तारे में,
वह उन चीज़ों को जो उसे दिखाई देती हैं परमेश्वर के लिए निकालेगा
वैसे ही जैसी वे हैं![35]

सुरक्षित रखने की आशीष (आयतें 15ख, 16, 17ग)

यूहन्ना ने यह ध्यान दिलाते हुए आगे लिखा कि, ''और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उनके ऊपर अपना तम्बू तानेगा''[36] (आयत 15ख)। परमेश्वर के अपने लोगों पर ''अपना तम्बू तानने'' का अर्थ यह है कि वह उनकी रक्षा करके उन्हें संभालेगा। RSV में है कि वह ''अपनी उपस्थिति से उन्हें सहारा देगा।''

फिर यूहन्ना को इसका परिणाम बताया गया: ''वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे: और न उन पर धूप, और न कोई तपन पड़ेगी''(आयत 16)।[37] यहां ''मनुष्य की आत्मिक तड़प की अन्तिम संतुष्टि'' मिलती है।[38] जीवन के सब संघर्ष खत्म हो जाते हैं।

आगे उसने ''पूरी बाइबल में सबसे छोटा कोमल वाक्य'' जोड़ा:[39] ''परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा ''[40] (आयत 17ग)। परमेश्वर दुख का हर आंसू, हानि का हर आंसू, निराशा का हर आंसू और पीड़ा का हर आंसू पोंछ डालेगा।

कहते हैं कि कवि रॉबर्ट बर्न्स ''इस अध्याय की अन्तिम आयतें बिना आंसुओं के नहीं पढ़ सकता था।''[41] विलियम बार्कले ने लिखा है, ''इस आयत में शोक वाले घर में और मृत्यु की घड़ी में कितने लोगों को शांति मिली होगी, उसकी गिनती करना असम्भव है।''[42]

निरीक्षण की आशीष (आयत 17क, ख)

यह आयत इस दावे के साथ बन्द होती है कि ''मेमना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा''[43] (आयत 17क; देखें यूहन्ना 10:11)। चरवाहे की भूमिका निभाने वाले मेमने का संकेत हमें अजीब लग सकता है,[44] परन्तु एक भेड़ की आवश्यकता को दूसरी भेड़ से अधिक कौन जान सकता है ?

चरवाहे के रूप में अपने लोगों के लिए एक बात जो यीशु करेगा वह ''उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले'' जाना है (आयत 17ख)।[45] ''बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी ... , जो परमेश्वर और मेमने के सिहांसन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती'' है (22:1)।

अर्ल पाल्मर ने इसे शांति देने वाला पाया ''कि जो विश्वास के प्रतिदिन के मेरे चलन

में आज मेरा प्रभु है, वही प्रभु है जिससे मैं अपनी यात्रा के अन्त में मिलूंगा। ... पूरे मानवीय इतिहास की सीमा के बाहर खड़ा कोई अजनबी नहीं, बल्कि वही प्रभु यीशु मसीह है, जो गलील और यरदन पर और यरूशलेम के निकट ऊबड़-खाबड़ तराई में खड़ा था।''[46] कोरी टैन बूम के पिता ने उसे बताया, ''जब यीशु तेरा हाथ पकड़े तो वह तुझे कस लेता है। जब यीशु तुझे कसे तो वह तुझे जीवन में अगुआई देता है। जब यीशु जीवन में तेरी अगुआई करे तो वह तुझे सुरक्षित घर पहुंचाता है।''[47]

सारांश

पौलुस ने एक बार लिखा था कि ''जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा कर रहूं, क्योंकि बहुत ही अच्छा है''(फिलिप्पियों 1:23ख)। कितना अच्छा? इतना अच्छा कि हम परमेश्वर के निकट उसकी संगति में रहेंगे। इस पृथ्वी की नीचता और गंदगी जाती रहेगी; और हमें श्वेत वस्त्र पहनाए जाएंगे, हम प्रभु की महिमा और सेवा करेंगे। हर आवश्यकता पूरी होगी। यीशु हमारे साथ ही रहेगा। परमेश्वर हमारा हर आंसू पोंछ डालेगा।

क्या यह सब सोचकर आपका मन स्वर्ग में जाने को नहीं करता? याद रखें कि वहां केवल वही लोग जाएंगे जिन्होंने ''अपने-अपने वस्त्र मेमने के लोहू में से धोकर श्वेत किए हैं'' (7:14ग)। यदि आपके पाप लहू से धोए नहीं गए हैं यानी आपके लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 22:16) और फिर प्रभु के साथ चलना आवश्यक है कि वह आपको लगातार धोता रहे (1 यूहन्ना 1:7)।

इस और पिछले पाठ का आरम्भ मैंने एक तूफ़ान की तस्वीर बनाकर किया था। यीशु ने एक बार तूफ़ान से बचने का कोर्स बताया था: जब बारिश आए, जब तूफ़ान आए और जब आंधियां चलें तो केवल वही लोग स्थिर रह सकेंगे, जो उसके वचन को सुनकर *मानते भी हैं* (मत्ती 7:24-27)। यदि आपने ''तूफ़ान में से ऊपर उठना'' है तो आप को आज ही उसकी आज्ञा माननी होगी! यदि आपने अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे में डुबकी नहीं ली है (प्रेरितों 2:38; 22:16), तो देर न करें। यदि आपके लिए मसीही चलन में वापस आना आवश्यक है तो ''अभी वह प्रसन्नता का समय है'' (2 कुरिन्थियों 6:2)।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यदि आप तूफ़ान के विचार को इस्तेमाल नहीं करना चाहते तो इस पाठ का शीर्षक ''दूसरी ओर का दृश्य,'' ''तस्वीर का दूसरा पहलू,'' या ''शेष कहानी'' हो सकता है। पहला दृश्य (7:1-8) एक दृश्य (समस्या के लिए तैयार हो रही कलीसिया), देता है, परन्तु दूसरा दृश्य (7:9-17) अन्तिम दृश्य (विजयी कलीसिया) देता है। एक और शीर्षक ''स्वर्ग में कोई आंसू नहीं'' हो सकता है।

एक अलग ढंग के लिए आप ''स्वर्ग में आनन्द कैसे करें'' की विषय वस्तु का इस्तेमाल कर सकते हैं: स्वर्ग तैयार लोगों के लिए तैयार की हुई जगह है (मत्ती

25:34; यूहन्ना 14:2; प्रकाशितवाक्य 21:27) और प्रकाशितवाक्य 7:9-17 बताता है कि क्या तैयारी करनी है: (1) परमेश्वर की आज्ञा मानने का आनन्द लेना सीखना (परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होना [आयत 9] उसकी इच्छा पूरी करने के लिए तैयार रहने का संकेत है); (2) परमेश्वर की आराधना का आनन्द लेना सीखना (आयतें 10-12); (3) शुद्ध जीवन जीने का आनन्द लेना सीखना (श्वेत वस्त्र; आयतें 13, 14; 19:8 भी देखें); (4) प्रभु की सेवा करने का आनन्द लेना सीखना (आयत 15); (5) पवित्र लोगों के साथ संगति का आनन्द लेना सीखना (पूरा पद्य)। इस शीर्षक से मेरा प्रवचन ''*द डे क्राइस्ट केम (अगेन)*'' *एण्ड अदर सरमन्स* में मिल सकता है।[48] हाल ही में पढ़ते हुए मुझे दो हवाले मिले, जिनका इस्तेमाल इस पाठ में किया जा सकता है: ''पवित्र शास्त्र सिखाता है कि स्वर्ग सेवा का स्थान होगा, जहां हर किसी को अपनी क्षमता के पूर्ण विकास का भरपूर अवसर मिलेगा।''[49] ''यूहन्ना स्वर्ग में किसी के भी न गाने की बात को सोच नहीं पाया।''[50]

यदि आप अध्याय 7 में से एक ही पाठ सिखाना चाहें, तो इसके सम्भावित शीर्षक ''यहां से अनन्तकाल तक,'' ''यह सब और स्वर्ग भी,'' या ''पहले और बाद में'' हो सकते हैं।

चाहें तो आप 6 और 7 अध्यायों को एक ही पाठ में बता सकते हैं। इसे मिलाने वाला शीर्षक ''परमेश्वर की इच्छा'' होगा। आप यह कहते हुए आरम्भ कर सकते हैं कि दोनों अध्यायों में परमेश्वर की इच्छा पर कितना ज़ोर दिया गया है। इसके सम्भावित उप भाग (1) परमेश्वर की इच्छा और सताव (6:1-11); (2) परमेश्वर की इच्छा और दण्ड (6:12-17); (3) परमेश्वर की इच्छा और सुरक्षा (7:1-8); (4) परमेश्वर की इच्छा और स्तुति (7:9-17) हो सकते हैं।

वारेन वियर्सबे ने 6 और 7 अध्यायों को (1) प्रतिफल (6:1-8), (2) प्रत्युत्तर (6:9-17) और (3) छुटकारा (7:1-17) पर ध्यान दिलाते हुए ''मुहरें और मुहर किए हुए'' शीर्षक से एक ही पाठ में मिलाया है।[51]

टिप्पणियां

[1]''खाड़कू कलीसिया'' वाक्यांश मसीही लोगों के *आत्मिक* युद्ध की बात है न कि शारीरिक युद्ध की। [2]कुछ लोग यह नहीं मानते कि प्रकाशितवाक्य 7:9-13 स्वर्ग का चित्रण है। इस स्थिति की समीक्षा के लिए, होमेर हेली *रैवलेशन: एन इन्ट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 213 देखें। अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि चाहे इस पद में स्वर्ग की तस्वीर नहीं है, तौ भी इसमें कम से कम स्वर्ग की आशिषों का *पूर्वस्वाद* है। [3]एलबर्टुस पीटर्स, *स्टडीज़ इन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1954), 125. [4]रॉबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इन्टरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 171. [5]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ द रैवलेशन* (ग्रैंड

रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 37. [6]KJV में ''जिसे कोई *मनुष्य* गिन नहीं सकता'' है। कोई *मनुष्य* इस भीड़ को गिन नहीं सकता था, परन्तु *परमेश्वर* गिन सकता था। [7]यह दूसरा भाग सात मुहरों वाली पुस्तक के आस-पास घूमता है (4:1-8:5)। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे की* पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए!'' पाठ देखें। [8]''मूलत:'' शब्द इस वाक्य के लिए आवश्यक है, क्योंकि बपतिस्मा लेने पर मुहर लगना (पिछला पाठ देखें) इस बात की गारंटी नहीं है कि कोई ''मरने तक विश्वासी'' रहेगा (2:10)। [9]कई बार दोनों भीड़ों में पाए जाने वाले दोनों अन्तरों की ओर ध्यान दिलाया जाता है। उदाहरण के लिए, अन्तर में आमतौर पर दिखाया जाता है कि एक समूह पृथ्वी पर है, जबकि दूसरा स्वर्ग में, परन्तु यह अन्तर इस पाठ में और कहीं बताया गया है। [10]कुछ लोग मुहर लगे लोगों को यूहन्ना के समय के मसीही लोगों तक और उस बड़ी भीड़ को प्रकाशितवाक्य लिखे जाने तक मर चुके मसीही लोगों तक सीमित किया जाता है। निश्चय ही दर्शन में ये लोग होंगे, परन्तु संकेत उससे अधिक व्यापक लगता है।

[11]*चार* शब्दों का इस्तेमाल इस विचार पर ज़ोर देता है कि छुड़ाए हुए लोग पूरी पृथ्वी से आए थे (''चार'' मनुष्य जाति का अंक है)। ''कुल,'' ''भाषा,'' ''लोग,'' और ''जाति'' की एक व्याख्या के लिए इस पुस्तक में पहले आया पाठ ''मेमना योग्य है'' देखें। [12]''भूतिया नगर'' कुछ देर तक खुशहाल रहे नगर के खण्डहरों को कहा गया है (आमतौर पर उसमें पाई जाने वाली कीमती धातुओं के कारण) जिन्हें बाद में छोड़ दिया गया। अब वहां कोई नहीं रहता और उसकी इमारतें गिर रही हैं। [13]जॉन विक बोमैन, द *फर्स्ट क्रिश्चियन ड्रामा: बुक ऑफ़ रैवलेशन* (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1955), 51. श्वेत वस्त्रों के महत्व पर और चर्चा के लिए, इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''आपके पास प्रश्न हैं? परमेश्वर के पास उत्तर हैं'' में 6:11 पर टिप्पणियां देखें। [14]अरल एफ़. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 182. [15]माउंस, 172. [16]दो ''आमीनों'' के बीच में सात गुणी महिमा रखी गई है। [17]परमेश्वर का सात गुणा आदर 5:12 में दिए गए मेमने के आदर की तरह ही है। 5:12 और 7:12 में तीन अन्तर मिलते हैं: (1) क्रम अलग है; (2) 7:12 में ''धन'' की जगह ''धन्यवादी'' शब्द है; (3) मूल शास्त्र में, 7:12 में सातों शब्दों से पहले निश्चय बोधक उप-पद (''the'') मिलता है, जबकि 5:12 में नहीं। प्रत्येक शब्द से पहले आने वाले निश्चयबोधक उप-पद के महत्व के लिए इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' में 4:11क पर नोट्स देखें। [18]हेली, 207. [19]देखें यूहन्ना 7:2, 37-39. ''पर्व के बड़े दिन'' अर्थात समारोह के दिन, यीशु ने ''जीवन का जल'' के बारे में बताया (आयत 38) और पुकारकर कहा कि ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीये'' (आयत 37)। [20]13 से 17 आयतों में प्रश्नों और उत्तरों का विचार-विमर्श आकाश के अचम्भों की ओर ध्यान दिलाने का नाटकीय ढंग है; इसे कुछ भी ''साबित'' करने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए। कुछ लोग इसका इस्तेमाल यह साबित करने के लिए करते हैं कि प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नहीं लिखी (''प्रेरित यूहन्ना भीड़ के कुछ लोगों को जानता होगा'')। कुछ लोग इसका इस्तेमाल यह साबित करने के लिए कहते हैं कि भीड़ मसीही लोगों की नहीं थी। (''यदि भीड़ में मसीही लोग नहीं थे, तो यूहन्ना को मालूम होना था कि वे कौन हैं'')। ऐसे तर्क अपोकलिप्टिक भाषा के नाटकीय स्वभाव के प्रतीक और नाटकीय स्वभाव की उपेक्षा करते हैं।

[21]सम्भवतया यह बात कि *प्राचीनों* में से एक यूहन्ना के पास आया महत्वपूर्ण है (एक बार पहले यह 5:5 में हुआ था।) प्रकाशितवाक्य के नाटक में, दृश्य की मांग मंच पर कोई भी पात्र बोल सकता है। यदि इस बात में कोई महत्व है, तो वह यह है कि प्राचीन (उद्धार पाए हुओं का प्रतिनिधित्व कर रहे) छुटकारे के विषय पर बोलने के योग्य थे। [22](जहां तक हमें मालूम है) यूहन्ना ने ऊंचे स्वर में प्रश्न नहीं पूछा था, क्योंकि ''कहा'' शब्द का अर्थ यह हो सकता है कि वह प्राचीन इस प्रेरित के किसी प्रश्न का उत्तर दे रहा था जो उसने अपने मन में पूछा था या उसके चेहरे से दिखाई दे रहा था, या उस प्राचीन को लगा था कि वह यह प्रश्न पूछेगा। [23]एल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेज फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: ज़ौंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 38. [24]''स्वामी'' के लिए यूनानी शब्द (*kurios*) सम्माननीय शब्द है, जिसे आम तौर पर परमेश्वर और यीशु के लिए सुरक्षित रखा जाता है, परन्तु कई बार मनुष्यों पर लागू किया जाता है (देखें मत्ती 18:25-34; 25:11; 1 पतरस 3:6)। [25]इसका अनुवाद ''जो बाहर आ रहे *हैं*'' हो सकता है, जो

यह संकेत दे कि यह दृश्य न्याय के अन्तिम दिन से पहले का है। दूसरी ओर, कई लोगों का मत है कि यहां भविष्य की बात करने के लिए वर्तमानकाल का इस्तेमाल करते हुए, अलंकार का इस्तेमाल हुआ है। NIV और RSV दोनों में इस वाक्यांश का अनुवाद ''*have* come out of'' हुआ है। [26]अधिकतर प्रीमिलेनियलिस्ट लोग इस गलत विचार को मानते हैं कि प्रभु के वापस आकर अपना हज़ार वर्ष का राज्य आरम्भ करने से पहले, सात वर्ष का काल होगा जिस दौरान विश्वासी लोग पृथ्वी पर से ऊपर उठा लिए जाएंगे (यानी ''रैपचर'' होगा) और जिस दौरान पृथ्वी पर बड़ा क्लेश ''महाक्लेश'' होगा। [27]डी. टी. नाइल्स, *एज़ सीइंग द इनविज़िबल: ए स्टडी ऑफ़ बुक ऑफ़ रैवलेशन* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1961), 139. [28]एडवर्ड ए. मैकडॉवल, *द मीनिंग एण्ड मैसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 99. [29]*विंडोज़ इन टू द फ्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 77 में मायर परलमैन द्वारा उद्धृत। [30]दूसरा ''उन्हें'' यूनानी क्रिया के अनुवाद ''हुए'' का समझ आने वाला भाग है।

[31]कुछ लोग इस बात पर ध्यान रखते हैं कि यह आयत मन्दिर की बात करती है, जबकि 21:22क कहती है कि ''मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा'' (1) फिर महत्व इस रूपक का है कि उसकी आराधना कहां होती है न कि इसका कि यह वैसा ही है या नहीं। (2) स्वर्ग में मन्दिर नामक कोई *भवन* नहीं होगा; बल्कि *सारा* स्वर्ग ही परमेश्वर का मन्दिर है, जहां उसकी आराधना होती है। [32]कुछ लोगों को यह चिन्ता रहती है कि यह आयत ''दिन-रात'' की बात करती है, जबकि 21:25क कहता है कि ''रात वहां न होगी।'' (1) याद रखें कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में महत्व रूपक का है न कि शब्दों के मेल खाने का (2) ''दिन रात'' यह कहने का कि ''बिना रुके, हर समय'' मुहावरेदार ढंग है। [33]NASB में ''सेवा'' के लिए यूनानी शब्द ''आराधना'' विशेषकर सार्वजनिक आराधना है। इसका अर्थ परमेश्वर की सेवा (वही शब्द जिसका इस्तेमाल रोमियों 12:1 में शरीर के जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए हुआ है) में अपने जीवनों को समर्पित करना भी हो सकता है। [34]इस घटना को जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के प्रचारक, ग्लैन पेस ने बताया था। स्वर्ग में काम करने की इच्छा रखने वाले लोगों के और उदाहरणों के लिए, देखें डेविड रोपर, *''द डे क्राइस्ट केम (अगेन)'' एण्ड अदर सरमन्स* (डैलस: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., 1965), 182-83. [35]रुडयर्ड किपलिंग, ''व्हेन अर्थ'स लास्ट पिक्चर इज़ पेंटड,'' *रुडयर्ड किपलिंग'स वर्स* (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एण्ड कं., 1940), 226. [36]KJV में ''उनके बीच में वास करेगा'' है। परमेश्वर स्वर्ग में अपने लोगों के बीच में वास *करेगा,* परन्तु यूनानी शास्त्र में इससे कहीं अधिक मिलता है। मूल यूनानी शास्त्र में वस्तुत: यह कहा गया है कि वह ''[अपना] तम्बू उन के ऊपर तानेगा।'' [37]7:16 की तुलना यशायाह 49:10 से करें, जो यहूदी निर्वासितों के अपने देश लौटने की तस्वीर है। [38]माउंस, 176. [39]परलमैन, 78. [40]7:17ग की तुलना यशायाह 25:8; 66:13 से करें।

[41]बाल्डिंगर, 38-39. [42]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑन जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेयली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 36. [43]KJV में ''उन्हें खिलाएगा'' है परन्तु क्रिया ''भेड़ों की तरह सम्भाल करना'' के लिए शब्द है। इसमें खिलाना सम्मिलित है, परन्तु इसमें इससे भी अधिक है। [44]मेमने की अगुआई की बात आरम्भिक पाठकों के लिए अनोखी नहीं होगी। अधिकतर झुंडों में ''अगुआई करने वाली भेड़'' होती थी। पशुओं की अधिक जानकारी रखने वाले लोगों ने ''आगे चलने वाली गाय'' को देखा होगा, जिसके गले में आम तौर पर घण्टी बंधी होती है। [45]और बातें जो अच्छा चरवाहा अपने लोगों की भलाई के लिए करता है और करेगा, जानने के लिए, भजन संहिता 23 और यशायाह 40:11 देखें। [46]पाल्मर, 184. [47]कोरी टैन बूम, *इन माई फ़ादर'स हाउस* (ओल्ड टैपन, न्यू जरसी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1976), 192. [48]रोपर, 175-86. [49]परलमैन, 77. [50]बाल्डिंगर, 38.

[51]वारेन वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 586-91.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. इस पाठ के लेखक के अनुसार मुहर लगे हुए लोग किन्हें बताया गया है (7:1-8)? अनगिनत भीड़ के द्वारा किसे दिखाया गया है (7:9-17)?
2. आपको क्या लगता है कि 7:9-17 में पहली शताब्दी के मसीही लोगों के लिए क्या संदेश था? आपके विचार से आज के मसीह लोगों के लिए इसमें क्या संदेश है?
3. भीड़ के लोगों द्वारा श्वेत वस्त्र पहनने का क्या महत्व है?
4. खजूर की डालियों का क्या महत्व है?
5. नये नियम में ''उद्धार'' शब्द का इस्तेमाल किन तीन अलग-अलग ढंगों से किया गया है।
6. कई टीकाकारों के अनुसार, 7:9-17 के कई विवरण किस यहूदी पर्व से सम्बन्धित हैं? उस पर्व के बारे में जो कुछ भी आज पढ़ सकते हैं, उसे पढ़ें और इस दौरान होने वाली किसी भी बात पर चर्चा के लिए तैयार रहें।
7. जब यूहन्ना के समय के मसीही लोगों ने ''महाक्लेश'' शब्द पढ़ा तो उनके लिए इस वाक्यांश का क्या अर्थ था?
8. हम यीशु के लहू में ''अपने वस्त्र कैसे धो'' सकते हैं?
9. क्या स्वर्ग सुस्ताने की जगह है? आपको क्या लगता है कि हम स्वर्ग में क्या करेंगे?
10. 7:16, 17 में आपके लिए सबसे अच्छी प्रतिज्ञा क्या है? क्यों?

सिंहासन के गिर्द भीड़ (7:9, 10)